भारत विकास परिषद्
Bharat Vikas Parishad

भारत विकास परिषद् के आदर्श
स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द की जीवन अवधि इस पृथ्वी पर अत्यंत अल्पकालिक रही। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को हुआ था एवं 4 जुलाई 1902 को उन्होंने महासमाधि ली। वे बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी थे एवं इस अल्पकाल में ही जीवन के हर क्षेत्र में उन्होंने अपनी छाप छोड़ी। वे एक मौलिक विचारक, प्रखर वक्ता, दार्शनिक, वेदों के प्रकांड विद्वान एवं अनन्य देश भक्त थे। वे केवल विचारक ही नहीं थे अपितु अपने विचारों एवं सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप भी देना जानते थे। उनकी संगठन शक्ति अद्भुत थी। निर्धनों की सेवा को वे ईश्वर की पूजा के समान मानते थे एवं इसी उद्देश्य से उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी।

भारत विकास परिषद् ने उन्हें प्रारम्भ से ही अपना आदर्श पुरुष माना था एवं परिषद् के कार्यक्रमों तथा प्रकल्पों के द्वारा स्वामी जी के सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप देने का निश्चय किया था। ऐसे ही कुछ प्रयासों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :-

पुण्य भूमि भारत : स्वामी जी भारत को पुण्य भूमि मानते थे। उनका विचार था कि भारत ने अध्यात्म, शान्ति एवं उदारता के क्षेत्रों में उन्नति के शिखरों को छुआ है। इतिहास साक्षी है कि मानव मस्तिष्क के विकास के लिए सर्वाधिक कार्य यहीं हुआ है। उनका विश्वास था कि नये भारत का निर्माण भारतीय परम्पराओं का अनुसरण करके ही हो सकता है, पश्चिम का अन्धानुकरण करके नहीं।

परिषद् ने नवयुवकों में अपने देश के प्रति प्रेम एवं श्रद्धा जागृत करने के लिये अनेक प्रकल्प चलाये हैं। सर्वप्रथम 1967 में राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छठी कक्षा से 12वीं कक्षा तक के छात्र छात्राऐं भाग लेते हैं एवं 7-8 के समूह में राष्ट्र प्रेम के गीत प्रस्तुत करते है। यह प्रतियोगिता शाखा, प्रान्त एवं राष्ट्रीय स्तर पर होती है।

भारत को जानो प्रतियोगिता भी इसी उद्देश्य से सन् 2001 से राष्ट्रीय स्तर पर आरम्भ की गई है एवं कनिष्ठ तथा वरिष्ठ दो वर्गों में छात्रों के लिये शाखा, प्रान्त एवं राष्ट्रीय

स्तर पर आयोजित होती है। इसमें लिखित तथा मौखिक दोनों प्रकार की परीक्षा होती है तथा भारत के इतिहास, धर्म, संस्कृति, साहित्य इत्यादि से संबंधित लिखित तथा मौखिक प्रश्न पूछे जाते हैं। 'भारत को जानो' नाम से एक पुस्तक हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रकाशित की गई है जिसकी एक लाख से अधिक प्रतियाँ प्रतिवर्ष वितरित की जाती हैं।

मानव सेवा : स्वामी जी के जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य मानव सेवा था। उनका कथन था कि जब तक इस देश के लाखों करोड़ों व्यक्ति निरक्षर हैं, अभाव, भूख एवं रोगों से पीड़ित हैं एवं तिरस्कृत जीवन व्यतीत कर रहे हैं तब तक इस देश के समृद्ध एवं शिक्षित लोगों को चैन से नहीं बैठना चाहिये। भारत के संभ्रांत वर्ग का सबसे बड़ा पाप ऐसे लोगों की उपेक्षा है। समाज के बल पर शिक्षित एवं समृद्ध होकर निर्धनों के लिये कुछ न करने वाले लोग महात्मा नहीं दुरात्मा हैं। वास्तव में मानव सेवा ही ईश्वर की पूजा है।

सेवा परिषद् के पांच मूल मंत्रों में से एक मंत्र है। सेवा के अन्तर्गत विकलांग सहायता योजना, ग्राम विकास योजना, स्वास्थ्य योजना, सामूहिक सरल विवाह, वनवासी सहायता योजना आदि प्रकल्प चल रहे हैं।

विकलांग सहायता के लिये देश भर में 13 विकलांग सहायता केन्द्र खोले गये हैं जिनमें विकलांगों को लगभग 26000 कृत्रिम अंग प्रतिवर्ष नि:शुल्क लगाये जाते हैं। 1000 से अधिक व्यक्तियों को रोजगार परक प्रशिक्षण देकर उनका पुनर्वास भी किया गया है।

विदेश से प्राप्त आर्थिक सहायता से विभिन्न प्रांतों में 10 गांवों का संपूर्ण विकास किया गया है एवं 7 गांवों में विकास कार्य चल रहा है।

स्वास्थ्य प्रकल्प के अन्तर्गत कोटा में 220 शय्याओं वाला अस्पताल कार्य कर रहा है जिसमें प्रत्येक प्रकार की चिकित्सा अत्यन्त कम शुल्क पर उपलब्ध है एवं लगभग 2 लाख रोगियों का इलाज प्रतिवर्ष किया जाता है। चंडीगढ़ में एक डायनोस्टिक केन्द्र तथा लुधियाना में एक अन्य अस्पताल में लाखों रोगियों को नि:शुल्क या न्यूनतम मूल्य पर चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराई जा रही है।

देश भर में कार्यरत 1200 शाखाऐं नेत्र चिकित्सा कैम्प, रक्तदान शिविर, चिकित्सा शिविर इत्यादि का आयोजन पूरे वर्ष करती रहती हैं। पूरे देश में लगभग 1400 स्थायी प्रकल्प चलाये जा रहे हैं जो शिक्षा, स्वास्थ्य, कानूनी सहायता, ऐंबुलेंस इत्यादि के रूप में निर्धनों की सहायता करते हैं। बाढ़, भूकम्प, सुनामी इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं के समय भी परिषद् नकदी एवं सामग्री के रूप में भरपूर सहायता करती आई है।

संगठन की आवश्यकता : प्रारम्भ से ही स्वामी जी की यह स्पष्ट धारणा बन चुकी थी कि शिक्षा के प्रसार, निर्धनों की सहायता एवं महिलाओं के उत्थान का कार्य एक कुशल एवं सक्षम संगठन के बिना नहीं हो सकेगा। इस संगठन के आधार स्तंभ निष्ठावान एवं कर्मठ कार्यकर्ता ही हो सकते हैं। ये कार्यकर्ता एक ऐसे तंत्र का निर्माण कर सकेंगे जिससे अध्यात्मिकता का संदेश एवं भौतिक सहायता प्रत्येक निर्धन के द्वार तक पहुंचेगी।

इसी उद्देश्य से उन्होंने राम कृष्ण मिशन की स्थापना की थी।

परिषद् के संस्थापकों ने प्रारम्भ से ऐसे ही एक संगठन की स्थापना का प्रयास किया। यही कारण है कि 50 वर्षों में एक शाखा से 1200 शाखाओं का विस्तार हुआ एवं आरम्भिक 25 सदस्य बढ़कर 50000 परिवार परिषद् से जुड़ गये हैं। यह समस्त कार्य एक विधान के अनुसार सुचारू रूप से चल रहा है। संस्कार एवं सेवा के मूल मंत्रों से लाखों देशवासी लाभान्वित हो रहे हैं।

प्रबुद्ध एवं समृद्ध वर्ग का जनसाधारण के प्रति उपेक्षा भाव : स्वामी जी ने 23 वर्ष की अवस्था में सन्यास ग्रहण कर लिया था। सन्यासी के रूप में रामकृष्ण मठ में रहते हुए उन्होंने अनुभव किया कि उनके गुरु भाई सन्यासी केवल अपनी साधना में एवं मोक्ष प्राप्ति के प्रयत्नों में लीन रहते थे। उन्हें अपने चारों ओर निवास कर रहे दीन दुखी, अशिक्षित एवं अनेक रोगों से पीड़ित जनसाधारण के दुखों से कोई वास्ता नहीं। उनके गुरु श्री रामकृष्ण ने उन्हें यही गुरु मंत्र दिया था कि पीड़ित मानव की सेवा ही सच्ची ईश्वर पूजा एवं अध्यात्मिक साधना है।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक के भारत भ्रमण में स्वामी जी ने देखा कि भारत की अधिकांश जनता अशिक्षित, अज्ञानता से परिपूर्ण एवं छुआ-छूत तथा जात-पात के बन्धनों में जकड़ी हुई है। उनकी वास्तविक आवश्यकता भोजन, शिक्षा एवं स्वास्थ्य रक्षा है। अध्यात्म एवं धर्म से पहले उनकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हमारा सर्वोच्च कर्तव्य होना चाहिये। सबसे बड़े दुख की बात यह है कि समाज का प्रबुद्ध, समृद्ध एवं शिक्षित वर्ग भारत की इस पीड़ित जनता के प्रति उपेक्षा का भाव रखता था, उनके दुःखों के प्रति लापरवाह था तथा आत्मकेन्द्रित था।

परिषद् के संस्थापकों ने भी 20वीं शताब्दी में समाज के समृद्ध एवं प्रबुद्ध वर्ग को इसी व्याधि से पीड़ित पाया। वे लोग भी आत्मकेन्द्रित थे एवं अपने चारों ओर निवास कर रहे भारत के दीन दुखी वर्ग से उन्हें कोई सरोकार नहीं था। अतः प्रारम्भ से ही परिषद् के संस्थापकों का यह मिशन था कि समाज के इस प्रबुद्ध वर्ग में चेतना जागृत की जाये, उन्हें संगठित किया जाये तथा भारत की पीड़ित जनता के उत्थान के कार्यक्रम में उन्हें प्रवृत्त किया जाये। साथ ही यह भी ध्यान रखा गया कि यह कार्य किसी श्रेष्ठता अथवा दान की भावना से न करके इसे भारतीय संस्कृति के आदर्शों के अनुसार पावन कर्तव्य की भावना से किया जाये। परिषद् ने अपने सदस्यों को स्वामी जी की दी हुई शिक्षा के अनुसार सदैव यही बतलाया है कि पीड़ित मानव को वे ईश्वर समझे और उसकी सेवा को पूजा की भांति करें।

प्रत्येक व्यक्ति में देवत्व का निवास है : स्वामी जी ने एक नया विचार Potential Divinity of Soul विश्व को दिया था। उनका विचार था कि विज्ञान ने मानव को बहुत कुछ दिया है किन्तु साथ ही ऐसा वातावरण भी उत्पन्न किया है जिससे मनुष्य पतन की ओर जा रहा है। बढ़ते अपराध, टूटते हुए घर एवं अनैतिकता इसी ओर संकेत

करते हैं। पवित्र वातावरण मिलने से मानव फिर से देवत्व प्राप्त कर सकता है। परिषद् का संस्कार सूत्र इसी विचार पर आधारित है। संस्कार का अर्थ है दुर्गणों का उच्छेदन एवं सद्गुणों का अधिष्ठापन है। संस्कार पूर्ण सद् वातावरण मिलने से मनुष्य देवत्व की ओर अग्रसर हो जाता है। संस्कार उसके प्रच्छन्न देवत्व को प्रकाश में लाते हैं।

महिला सशक्तिकरण के लिये सन्देश : स्वामी जी ने भारतीय महिलाओं के लिये मातृत्व को सर्वोच्च आदर्श माना था। मां के रूप में नारी सर्वोत्कृष्ट, निस्वार्थ, कष्टों को सहन करने वाली एवं क्षमा शील बन जाती है। वे माता सीता को भारतीय नारी का मूर्त रूप मानते थे। उनके अनुसार महिलाओं को उच्चतम शिक्षा दी जानी चाहिए, उनसे आदर पूर्ण तथा समानता का व्यवहार होना चाहिये एवं उन्हें प्रत्येक प्रकार की जिम्मेदारी सम्भालने के योग्य बनाया जाना चाहिए।

परिषद् ने अपनी स्थापना के समय से ही प्रत्येक स्तर पर महिला सहभागिता पर ज़ोर दिया है। यह एक मात्र ऐसी संस्था हैं जहां पति पत्नी दोनों को ही सदस्य माना जाता है एवं दोनों को ही मताधिकार भी है। वे प्रत्येक पद के लिये सक्षम हैं एवं वर्तमान समय में शाखा, प्रान्त, ज़ोन एवं केन्द्र के स्तरों पर महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर रही हैं।

युवा शक्ति को प्रोत्साहन : स्वामी जी युवकों को सदैव प्रोत्साहित करते थे। मद्रास एवं कलकत्ता में दिये गये उनके भाषण युवाओं के प्रेरणा स्रोत हैं। भारत विकास परिषद् ने भी सदैव नवयुवकों को संस्कार एवं सेवा के कार्यक्रमों से जोड़ने का प्रयत्न किया है। परिषद् उनके लिये संस्कार शिविरों का आयोजन करती है। राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता, भारत को जानो, गुरु वन्दन-छात्र अभिनन्दन इत्यादि प्रकल्पों के माध्यम से लाखों किशोर एवं युवक परिषद् के सम्पर्क में आते हैं। उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों एवं कॉलिजों के छात्रों के लिये सेमिनारों का आयोजन प्रारम्भ किया गया है।

✶ इस देश के भविष्य को लेकर मेरी आशाएं उन चरित्रवान एवं प्रतिभाशाली युवकों पर टिकी हुई हैं जो दूसरों की सेवा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर सकते हैं।

✶ प्रत्येक स्त्री एवं पुरुष को ईश्वर का स्वरूप समझो। तुम किसी की सहायता नहीं कर सकते - तुम केवल सेवा कर सकते हो।

✶ भारत वर्ष में सीता का नाम उस प्रत्येक वस्तु का प्रतीक है जो सर्वोत्तम है, पवित्र है एवं शुचिता पूर्ण है एवं नारीत्त्व का गुण है।

April -12 Printed by: Veetrag Printers # 9810375060, 23277816

भारत विकास परिषद्

भारत विकास भवन, बी.डी. ब्लाक, पावर हाउस के पीछे, पीतमपुरा, दिल्ली-34
दूरभाष: 27313051, 27316049 फैक्स-011-27314515
ई मेल- bvp@bvpindia.com वेबसाइट- www.bvpindia.com

भारत विकास परिषद् से सम्बन्धित प्रत्येक जानकारी हेतु परिषद् की वेबसाइट को देखें।